**(अ) उत्पादन व रोजगार पर प्रभाव** (Effects on Production and Employment)—साधारणतया मुद्रा-स्फीति से उत्पादन व रोजगार में वृद्धि होती है। मूल्य बढ़ने की अवधि में (मुद्रा-प्रसार) लाभ की परिसीमा (Margin) बढ़ जाती है क्योंकि कीमत में वृद्धि उत्पादन लागत में वृद्धि से अधिक तेजी से होती है। वस्तु की उत्पादन लागत में मजदूरी, लगान, ब्याज इत्यादि सम्मिलित रहता है परन्तु इनकी लागतों में वृद्धि व्यापारियों के लिए लाभदायक होती है। इससे उद्योग को प्रोत्साहन मिलता है, उत्पादन अधिक होता है और श्रमिकों को अधिकाधिक मात्रा में रोजगार मिलता है, इस प्रकार मूल्य-स्तर में वृद्धि के फलस्वरूप उत्पादन और रोजगार में वृद्धि होती है लेकिन यह अनुकूल प्रभाव केवल तभी तक रहता है जब तक कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति नहीं आ जाती। पूर्ण रोजगार की स्थिति के बाद स्फीति तेजी के साथ होती है जिसके भयंकर परिणाम होते हैं। जैसे—अर्थव्यवस्था में अत्यधिक मुद्रा-प्रसार (Hyper Inflation) हो जाता है जिसके कारण उत्पादन में कमी और बेरोजगारी में वृद्धि होती है।

**(ब) धन के पुनर्वितरण पर प्रभाव** (Effects on Redistribution of Wealth)—मुद्रा-स्फीति का समाज के विभिन्न वर्गों पर निम्न प्रभाव पड़ता है :

(i) **ऋणी तथा ऋणदाता** (Debtors & Creditors Class)—ऋणी ऋणदाता से रुपया उधार लेकर भविष्य में ब्याज सहित लौटाने का वादा करता है परन्तु स्फीति के कारण जब कीमतें बढ़ जाती हैं अर्थात् मुद्रा का मूल्य कम हो जाता है तो ऋणी वास्तविक रूप में रुपया कम वापस करता है और उसे लाभ होता है परन्तु ऋणदाता को हानि होती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति सन् 2008 में 100 रु. उधार लेकर वह सन् 2009 में चुकाता है, जबकि वस्तुओं के मूल्य दुगुने हों तो वह 100 रुपया चुकाकर सन् 2002 की तुलना में केवल 50 रुपये की वस्तुएँ दे रहा है (क्योंकि मुद्रा की क्रय-शक्ति आधी रह गयी है)।

(ii) **उत्पादक व व्यापारी वर्ग** (Producers and Businessmen Class)—उत्पादक व व्यापारी वर्ग को स्फीति से लाभ होता है क्योंकि मूल्य बढ़ने पर स्टॉक के मूल्य अचानक बढ़ जाते हैं। यद्यपि आगतों के मूल्य बढ़ने के कारण इनकी उत्पादन लागत भी बढ़ती है लेकिन एक तो आगतों के मूल्य बढ़ने और उत्पादन के मूल्य बढ़ने में समयान्तराल होता है। आगत जो स्फीति से पूर्व खरीदे जा चुके हैं, उनके मूल्य-वृद्धि का लाभ उत्पादकों को मिल जाता है। दूसरे, उत्पादन के मूल्यों में वृद्धि आगतों के मूल्यों में वृद्धि से अधिक होती है। तीसरे, मजदूरी, ब्याज व बीमे की दरें प्रायः स्थिर रहती हैं। अतः इस काल में उत्पादकों व व्यापारियों को लाभ होता है।

(iii) **विनियोगी वर्ग** (Investor Class)—विनियोगी वर्ग से हमारा आशय उन व्यक्तियों से है जो उद्योग और व्यापार में अपना धन लगाते हैं और उससे आय प्राप्त करते हैं। इस वर्ग को दो भागों में बाँटा जा सकता है—**(क) निश्चित आय वाले विनियोगी**—निश्चित आय प्राप्त करने वाले विनियोगी; जैसे—ऋणपत्र के स्वामियों को मुद्रा-स्फीति में हानि उठानी पड़ती है क्योंकि वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हो जाने से वास्तविक आय घट जाती है। **(ख) परिवर्तन आय वाले विनियोगी**—इस वर्ग के व्यक्तियों को मुद्रा-स्फीति की दशा में लाभ होता है क्योंकि मौद्रिक आय भी व्यापार व व्यवसाय के लाभ के साथ-साथ बढ़ जाती है, परन्तु एक बात उल्लेखनीय है कि इस वर्ग की वास्तविक आय में कोई विशेष वृद्धि नहीं होती क्योंकि वस्तुओं का कीमत-स्तर पर्याप्त ऊँचा हो जाने के कारण मुद्रा की क्रय-शक्ति घट जाती है।

(iv) **वेतन आश्रित वर्ग** (Salary Class)—वेतन पाने वाले श्रमिक स्फीति-काल में हानि उठाते हैं, हालांकि कीमतों में वृद्धि के साथ-साथ उनके वेतन में भी वृद्धि होती है परन्तु उनके वेतन में उस अनुपात में वृद्धि नहीं होती जितनी वृद्धि उन वस्तुओं की कीमतों में होती है जिनको वे अधिक प्रयोग में लाते हैं।

हाँ, एक दृष्टि से श्रमिकों को मुद्रा-स्फीति काल में लाभ प्राप्त होता है। मुद्रा-स्फीति के समय आशावादी वातावरण होता है जिसके फलस्वरूप उत्पादन की मात्रा बढ़ायी जाती है जिससे बेरोजगारी में कमी होती है तथा सभी श्रमिकों को काम उपलब्ध हो जाता है। श्रमिक परिवार की कुल मौद्रिक आय में वृद्धि हो जाती है क्योंकि परिवार के सभी सदस्यों को काम मिल जाता है।

(v) **कृषक वर्ग** (Farmers Class)—स्फीति में किसानों को लाभ होता है क्योंकि उनके उत्पादनों का मूल्य बढ़ता है और उनकी लागतें (ब्याज, कर इत्यादि) प्रायः पूर्ववत् रहती हैं। लागतों में यदि वृद्धि होती भी है तो उतनी नहीं होती जितनी कीमतों में वृद्धि होती है। अतः किसानों को स्फीति-काल में लाभ होता है।

Scanned with CamScanner

(vi) **उपभोक्ता वर्ग** (Consumers)—समाज का प्रत्येक वर्ग उपभोक्ता होता है और इनमें से मुद्रा-प्रसार के दिनों में कुछ व्यक्तियों की आय बढ़ जाती है, पर सामान्य जनता को कष्ट ही होता है क्योंकि वस्तुओं के मूल्य अधिक बढ़ जाते हैं फलस्वरूप उन्हें अपना उपभोग कम करना पड़ता है। **सैम्युअलसन** ने लिखा है, "पहले हम जेब में द्रव्य ले जाते थे तथा टोकरी में खाद्य पदार्थ लाते थे। अब टोकरी में द्रव्य ले जाते हैं और जेब में खाद्य पदार्थ लाते हैं।"

उदाहरणार्थ, 1924 में जर्मनी की अति मुद्रा-स्फीति काल में मूल्य इतने बढ़ गये थे कि मनुष्य की उम्र-भर की बचत से एक प्याली कॉफी का मूल्य नहीं निकलता था।

**मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन के प्रभाव**

- **(1) आर्थिक प्रभाव**
  - **(अ) उत्पादन, रोजगार पर प्रभाव**
  - **(ब) धन के वितरण पर प्रभाव**
    - (i) ऋणी तथा ऋणदाता वर्ग
    - (ii) व्यापारी एवं उत्पादक वर्ग
    - (iii) विनियोगी वर्ग
    - (iv) वेतन आश्रित वर्ग
    - (v) कृषक वर्ग
    - (vi) उपभोक्ता वर्ग
  - **(स) अन्य आर्थिक प्रभाव**
    - (i) करारोपण
    - (ii) बैंकिंग व बीमा कम्पनी
    - (iii) आयात व निर्यात पर प्रभाव
    - (iv) गैर-आयोजित ह्रास में वृद्धि
    - (v) उच्च लागत अर्थव्यवस्था
- **(2) नैतिक प्रभाव**
  - (i) नैतिक पतन
  - (ii) घूँसखोरी को प्रोत्साहन
  - (iii) सट्टेबाजी को प्रोत्साहन
- **(3) सामाजिक प्रभाव**
  - (i) आर्थिक विषमता
  - (ii) बेरोजगारी में कमी
  - (iii) संचय में कमी
  - (iv) हड़तालें
- **(4) राजनीतिक प्रभाव**
  - (i) राजनीतिक क्रान्ति
  - (ii) व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को आघात

**(स) अन्य आर्थिक प्रभाव** (Other Economic Effects)—अन्य आर्थिक प्रभाव निम्न हैं :

(i) **करारोपण** (Taxation)—मुद्रा-प्रसार में अनेक नये कर लगाये जाते हैं और पुराने करों की दरों में वृद्धि की जाती है।

(ii) **बैंकिंग व बीमा कम्पनी पर प्रभाव** (Effects on Banks and Insurances Companies)—नये-नये बैंक, बीमा कम्पनियों की स्थापना होने लगती है और पुरानी संस्थाओं का विकास होता है।

(iii) **आयात व निर्यात पर प्रभाव** (Effects on Banks and Insurances Companies)—आयात उत्साहित और निर्यात हतोत्साहित होते हैं क्योंकि देश में कीमत-स्तर बढ़ जाता है। इसमें देश का व्यापार सन्तुलन प्रतिकूल हो जाता है।

(iv) **गैर-आयोजित व्यय में वृद्धि** (Increase in Non-planned Expenditure)—स्फीति के कारण गैर-आयोजित व्यय का प्रतिशत भी निरन्तर बढ़ रहा है। राज्य सहायताएँ (Subsidies) देने से समस्या का समाधान नहीं होगा बल्कि राज्य सहायताएँ प्रदान न करने पर कीमतों में अधिक वृद्धि होगी।

(v) **उच्च लागत अर्थव्यवस्था** (High Cost Economy)—स्फीति का सबसे बुरा प्रभाव उच्च लागत **अर्थव्यवस्था सृजन के रूप में लक्षित होता है।** इसके कारण हमारा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में टिक पाना कठिन

Scanned with CamScanner

होता जा रहा है। इस सन्दर्भ में हम निम्न तकनीकी स्तर, सार्वजनिक क्षेत्र की अक्षमता, उत्पादिता की तुलना में ऊँची मजदूरी के स्तर आदि को तो दोषी ठहराते हैं लेकिन स्फीति को इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराते।

**मुद्रा-स्फीति का नैतिक प्रभाव** (Moral Effects of Inflation)

मुद्रा-स्फीति के प्रमुख नैतिक प्रभाव निम्नलिखित हैं :

(i) **नैतिक पतन** (Moral Down-fall)—ऊँचे मूल्यों से अधिक लाभ कमाने की दृष्टि से उत्पादक एवं व्यापारी अनैतिक कार्य करने लगते हैं। वस्तुओं की किस्म में कमी करना, निर्धारित मूल्यों से कीमत अधिक होना, मुनाफाखोरी, मिलावट तथा चोरबाजार में बेचने की प्रवृत्तियाँ नैतिक पतन लाती हैं।

(ii) **घूँसखोरी को प्रोत्साहन** (Encouragement to Bribery)—सरकारी अधिकारियों में भी नियन्त्रणों को लागू करने में रिश्वत एवं घूँसखोरी को प्रोत्साहन मिलता है।

(iii) **सट्टेबाजी को प्रोत्साहन** (Encouragement to Speculation)—स्फीति के समय सट्टेबाजी की क्रियाओं में अपार वृद्धि हो जाती है तथा प्रत्येक व्यक्ति सट्टे की प्रवृत्ति की ओर आकर्षित होने लगता है।

**सामाजिक प्रभाव** (Social Effects)

मुद्रा-स्फीति के सामाजिक प्रभाव निम्नलिखित हैं :

(i) **आर्थिक विषमता** (Economic Disparities)—स्फीति-काल में वृद्धि का अधिकांश भाग धनिकों को प्राप्त होने से आर्थिक विषमता में निरन्तर वृद्धि होती रहती है जिससे समाज में असन्तोष की भावना बढ़ती है।

(ii) **बेरोजगारी में कमी** (Reduction in Unemployment)—स्फीति-काल में अनेक नवीन उद्योग स्थापित हो जाते हैं जिससे बेरोजगारी में कमी हो जाती है तथा बेरोजगारी की समस्या का एक सीमा तक समाधान सम्भव हो जाता है।

(ii) **संचय में कमी** (Reduction in Hoarding)—भविष्य में मुद्रा की क्रय-शक्ति के कम हो जाने के कारण जनता में धन संचय करने की प्रवृत्ति कम हो जाती है और वह वस्तुओं पर व्यय करने लगती है।

(iv) **हड़तालें** (Strikes)—जब कीमतें बढ़ती हैं, तब मजदूर वर्ग अपनी मजदूरी बढ़ाने का प्रयत्न करता है क्योंकि रहन-सहन का खर्च बढ़ जाता है। इसके फलस्वरूप मूल्य-वृद्धि के काल में प्रायः हड़तालें होती रहती हैं।

**राजनीतिक प्रभाव** (Political Effects)

(i) **राजनीतिक क्रान्ति** (Political Revolution)—मुद्रा-स्फीति के केवल आर्थिक तथा सामाजिक प्रभाव नहीं होते, इसके राजनीतिक परिणाम भी होते हैं। मुद्रा-स्फीति काल में जनता में सरकार के प्रति असन्तोष बढ़ता है तथा तनावपूर्ण वातावरण उत्पन्न हो जाता है। राजनीतिक पार्टियाँ इस स्थिति से लाभ उठाती हैं तथा राज्य सत्ता को बदल देती हैं।

स्फीति के कारण जनता में असन्तोष होने पर ही इटली, स्पेन, फ्रांस आदि में राजनीतिक परिवर्तन हुए थे।

(ii) **व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर प्रभाव** (Effects on Individual Freedom)—स्फीति-काल में सरकार द्वारा तरह-तरह के प्रतिबन्ध लगाने पर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को आघात पहुँचता है तथा प्रजातन्त्र अव्यावहारिक हो जाता है।

Scanned with CamScanner